www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 15 रोहतक, 14 सितम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

बुद्धिमान एवं बुद्धिहीन में अन्तर

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

सब प्राणियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना गया है, क्योंकि मनुष्य को ईश्वर ने बुद्धि दी है, जिससे वह सोच-विचार कर कार्य करे। अच्छे-बुरे का बुद्धि से विचार करे। बुद्धि से सोच-विचार कर कार्य करने वाला ही बुद्धिमान् कहलाता है और बुद्धि से काम न लेकर अर्थात् ठीक-गलत का, अच्छे-बुरे का, असत्य-सत्य, हानि-लाभ का आदि-आदि विचार न करने वाला बुद्धि होते हुए भी बुद्धिहीन या निर्बुद्धि कहलाता है। बुद्धि उसको भी ईश्वर ने दी है, परन्तु उसका प्रयोग नहीं कर रहा है।

जरा सोचिये, गाड़ी आपके पास है, गाड़ी आपकी है, आप स्वयं गाड़ी को (ड्राइव) नहीं चलाते और चलाने के लिए ड्राइवर (चालक) रख लिया और आप गाड़ी में सवार होकर सफर पर निकल पड़े, ड्राइवर आपको जिधर चाहे ले जा सकता है, आप स्वयं गाड़ी चलायेंगे तो आप अपनी बुद्धि से सोच-विचार कर रैडलाइट का, ऊँची-नीची सड़का का, सड़क में पड़े गड्ढों का ध्यान रखकर चलायेंगे, क्योंकि उस समय आप अपनी बुद्धि का प्रयोग कर रहे होंगे। अगर ड्राइवर चला रहा है और उसने रैडलाइट क्रास कर दी तो आपकी गाड़ी का चालान होना निश्चित है। अक्सर आज यही देखने में आ रहा है कि मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग न करके, दूसरों की बुद्धि से काम कर रहे हैं। जो जिसने उल्टा-सीधा उपदेश कर दिया उसी को सच मान लेते हैं। क्या यह उचित है कि कोई कह दे कि मैंने गधे के सिर पर सींग देखे और दूसरा कोई कह दे कि मैंने ऊँट के सूँड देखी और तीसरा कोई कह दे कि बकरी ने शेर के बच्चे को जन्म दिया आदि-आदि। क्या आप इस बात को सत्य मान लोगे। बुद्धिमान् तो मानेगा नहीं, हाँ हो सकता है बुद्धिहीन इन बातों से सहमत हो जाये। आज ऐसे लोगों की संख्या अधिक है।

ईश्वर ने बुद्धि सोच-विचार कर उचित-अनुचित का निर्णय करने के लिए दी है। सोचने के विषय—धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य, अच्छा-बुरा, लाभ-हानि, शुभ-अशुभ, जन्म-मृत्यु, स्वर्ग-नरक, इच्छा-अनिच्छा, खट्टा-मीठा, विद्या-अविद्या, प्रकाश-अन्धकार, वेद-पुराण, ईमानदार-बेईमान, आत्मा-परमात्मा आदि-। एक धर्म-अधर्म पर बुद्धि से विचारते हैं। मनुष्य वेदादि शास्त्रों को पढ़कर, सुनकर धर्म-अधर्म के तत्त्व और रहस्यों को जान सकता है। महर्षि दयानन्द से ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदोक्त धर्म का वर्णन निम्न प्रकार से किया है।

देखो! परमेश्वर हम सभी के लिए धर्म का उपदेश करता है कि हे मनुष्य लोगो! जो पक्षपात रहित, न्याय, सत्याचरण से युक्त धर्म है, तुम लोग उसी को ग्रहण करो, उससे विपरीत कभी न चलो। धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है—एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा, दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेदविद्या को जानने से ही मनुष्यों की सत्य-असत्य का यथावत् बोध होता है।

बुद्धिमान्—जो श्रेष्ठ गुणों को शीघ्र धारण कर ले, उत्तम व्यवहारों का आचरण और बुरे कामों को छोड़ देना, सुख, विद्या आदि गुणों को प्राप्त करना और दुष्ट गुणों का त्याग करना, पुरुषार्थ से धन-संग्रह करना, सुख-दुःख, लाभ-हानि, होने में भी धीरज को न छोड़ना। जो ईश्वर की आज्ञा अर्थात् सत्याचरण धर्म करना और इसके उल्ट पाप कर्मों से डरना, ये बुद्धिमान् के गुण हैं।

बुद्धिहीन—जो झूठे आचरण करने और सच्चे कामों को नहीं करने का मन में विचार करते हैं। ईश्वर को जानते नहीं, कोई बतलाये तो उसकी मानते नहीं, अगर कोई पाखण्डी यह कह दे कि रोज सुबह चार बजे उठकर पीपल को जल चढ़ा और वह रोज नियम से तेल का दीपक जलाए तो तेरे सारे पाप खत्म हो जायेंगे, दुःख दूर हो जायेंगे। घर में सुख-सम्पत्ति का वास होगा, तो बुद्धिहीन नित्य इस काम को सब काम छोड़कर करेगा और डरेगा भी कि मैंने ऐसा न किया तो कुछ पीपल देवता और शाप न दे दें, जिससे मेरे दुःख बढ़ सकते हैं। बुद्धिमान् तो ऐसा कभी नहीं करेगा, क्योंकि उसको मालूम है कि पीपल वृक्ष है, उसमें कुछ करने की सामर्थ्य नहीं, कोई इसको काटे, तो भी अपना बचाव नहीं कर सकता, मनुष्य को कोई नुकसान पहुंचाये तो वह अपना बचाव अवश्य करता है, चाहे कोई उसके प्राण ले ले, परन्तु जब तक उसके शरीर में प्राण हैं तब तक बचाव के लिए हर प्रकार से प्रयत्न करता रहेगा। देखिये! पीपल वृक्ष के बहुत लाभ हैं, इसकी लकड़ी हवन के लिए सबसे उत्तम है, इसकी लकड़ी को जलाने से धुंआ नहीं निकलता, दूसरे इससे बहुत औषधि बनती हैं, तीसरे यह रात के समय में भी ऑक्सीजन छोड़ता है। दूसरे वृक्ष रात को कार्बन-डाई-ऑक्साइड और दिन को ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इसलिए पीपल का महत्त्व अन्य वृक्षों की भाँति अधिक है। पीपल की जड़ में पानी देना अर्थात् जल चढ़ाना बात तो एक ही है परन्तु पाखंडियों ने पानी देने की बजाय जल चढ़ावा धर्म कार्य बता देने से पीपल पर जल चढ़ने लगा। मैंने इसके अतिरिक्त और भी देखा, पीपल के पेड़ के तने पर इतने रंग-बिरंगे धागे लगे थे। एक से पूछा कि भाई इस पीपल के पेड़ को आप ये धागा क्यों बांध रहे हो, इसका क्या लाभ है? उसने बतलाया कि पंडित जी ने कहा है कि आप पीपल को धागा बांध और जल चढ़ा आना, आपकी सब इच्छाएं पूरी हो जायेंगी, ये बुद्धिहीनों की पहचान है। किसी ने कहा था कि यदि गधे के सिर पर सींग होते तो दूर से पहचाने जाते, परन्तु अब तो उनकी पहचान उनके आचरण और कार्यों से ही होती है। माता-पिता को चाहे उनके मांगने पर कभी पानी का गिलास भी न दिया हो, लेकिन पीपल को जल अवश्य चढ़ा आयेंगे। माता-पिता ने कितने कष्ट उठाकर पाला-पोषा उसका कोई महत्त्व नहीं और किसी पाखण्डी ने कुछ कह दिया तो उसका कहना शिरोधार्य होता है।

बुद्धिमान् को यह ज्ञान है कि ईश्वर एक है, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सब सामर्थ्यवान्, निराकार, अजन्मा, निर्विकार, न्यायकारी, दयालु, प्रकृति की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है। वह सबके अच्छे-बुरे कर्मों का फल देता है, वह सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है, सबके कर्मों को यथावत् देखता है, उससे कोई कुछ छुपा नहीं सकता।

ईश्वर क्या कहता है? हे मनुष्य लोगो! तुम्हारा जितना सामर्थ्य है, उसको धर्म के साथ मिला के सब सुखों को बढ़ाते रहो, तुम्हारा सब पुरुषार्थ सब जीवों के सुख के लिए हो, जिससे मेरे कहे धर्म का कभी त्याग न हो। सत्य

शेष पृष्ठ 7 पर....

www.thearyasamaj.org

वेद लिए आया ब्रह्मचारी देश उद्धारक पर उपकारी

केवल आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जिसने केवल एक व्यक्ति ही नहीं, एक विषय की नहीं, एक समाज की नहीं, एक राष्ट्र की नहीं, अपितु पूरे मानवमात्र को सुखी और आनन्दित करने की बात कही है, वेद को ही ग्रहण करने की बात कही है। प्रत्येक को अपने स्वतन्त्र राष्ट्र की अखण्डता और स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए और सभी राष्ट्र मिलकर एक सुदृढ़, शान्तिप्रिय भूमण्डल बने ऐसी कामना रखने की बात कही है।

आर्यसमाज की स्थापना के पीछे कोई छुपा कार्यक्रम नहीं था। किसी धर्म समुदाय को नीचा दिखाना नहीं था। स्वामी जी ने जब भी संदेश दिया तो वह केवल वेद आधारित, विज्ञान सम्मत सारे मानव मात्र को दिया। आपने अपने संदेश में स्पष्ट कर दिया था कि आर्यसमाज की स्थापना करने के पीछे कोई नया धर्म या सम्प्रदाय नहीं है। आर्यसमाज वेद आधारित श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज हो ऐसी कामना है। आर्यों का एकमात्र उद्देश्य आर्यसमाज के नियमों द्वारा सार्वभौमिक, सार्वकालिक, मानव जाति की उन्नति की ओर चलने की प्रेरणा देना मात्र है, संसार के अनेक देशों के बुद्धिजीवियों ने इन आर्यसमाज के 10 नियमों पर बड़ा मंथन किया परन्तु किसी ने और कहीं भी इसमें त्रुटि नहीं पाई। इनमें शाश्वत सत्य की स्पष्ट झलक है।

आर्यसमाज ने कहीं भी एक की बात नहीं कही अपितु सभी के कल्याण की बात कही है। हमेशा संगतिकरण पर विशेष जोर दिया है। हमारी प्रार्थना में भी **'पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्वल कीजिये', 'तूने हमें उत्पन्न किया', 'ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला'** कहीं भी मेरे शब्द का प्रयोग नहीं। आर्यसमाज द्वारा अपने लिए की गई प्रार्थना को सबसे शून्य श्रेणी की प्रार्थना माना गया है।

आर्यसमाज ने हमेशा राष्ट्र को सर्वप्रिय माना है। राष्ट्र उत्थान को प्रमुख मानते हुए स्वामी जी ने लिखा है, **''हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।''**

यह वेदवाद और राष्ट्रवाद ही आर्यसमाज को ऋषि दयानन्द से विरासत में मिला है। इसलिए हम कहते हैं—आर्यसमाज की दो भुजायें हैं—एक वेद और दूसरी राष्ट्र। इन दोनों में से एक भी भुजा को काट देंगे तो आर्यसमाज स्वस्थ अपने में स्थित नहीं रहेगा, वह पंगु हो जायेगा, वह केवल वेदवादी सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा और तब, अन्य सम्प्रदायों से उसमें कोई अन्तर नहीं रहेगा। अन्य जितनी राजनैतिक संस्थाएँ हैं, वे केवल राष्ट्र-राष्ट्र चिल्लाती हैं, वे धर्म का नाम नहीं लेतीं और जितनी धार्मिक संस्थाएं हैं, वे केवल अपने मजहब या मजहबी किताब का नाम लेती हैं, उनको राष्ट्र से कोई लेना देना नहीं है। सब राजनैतिक पार्टियाँ राजनैतिक साम्प्रदायिकता से ग्रस्त हैं और धार्मिक संस्थाएँ धार्मिक साम्प्रदायिकता से ग्रस्त हैं, जबकि केवलमात्र आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो धार्मिक या राजनैतिक दोनों प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है। इसलिए हम आर्यसमाज को कोई पार्टी या सम्प्रदाय कहने के बजाय ऐसा संगठनात्मक आन्दोलन कहना पसन्द करते हैं जो वेद पर आधारित राष्ट्र का केवल भारत का नहीं-प्रत्येक राष्ट्र का निर्माण करना चाहता है।

अन्य मतावलम्बियों को 'वेद पर आधारित' विशेषण से साम्प्रदायिकता की गन्ध आ सकती है। परन्तु उनको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि वेद किसी सम्प्रदाय या वर्ग-विशेष के लिए नहीं, न ही किसी राष्ट्र-विशेष या काल-विशेष के लिए नहीं है, प्रत्युत वह तो मानवमात्र को अमृत-स्वरूप परमपिता परमात्मा की सन्तान मानकर एक इकाई के रूप में स्वीकार करता है। किसी प्रसिद्ध मुस्लिम नेता ने कभी कहा था कि मैं यह देखकर चकित होता हूँ कि ''आर्यसमाज की शरण में आते ही व्यक्ति राष्ट्रभक्त बन जाता है।'' इसमें चकित होने की कोई बात नहीं। राष्ट्रभक्ति प्रत्येक आर्यसमाजी की घुट्टी में है। यही आर्यसमाज की विशेषता है, यही उसकी अपनी अलग पहचान है।

इस विश्लेषण के बाद आधुनिक स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज के योगदान के सम्बन्ध में कहने को बहुत कम रह जाता है। यों व्यक्तियों पर जाओ तो इसका ब्यौरा अत्यन्त विस्तृत होगा। किसी कवि के शब्दों में—

वेद की बंशी हाथ में लेकर,
महर्षि ने जब गीत सुनाए।
सारे जहाँ में छा गई मस्ती,
झूम उठे सब अपने पराए।
कोई जुबां पर लाये न लाये,
महर्षि गाथा गाए न गाए।
दिल से मगर सब मान चुके हैं,
महर्षि ने जो उपकार कमाए।
वेदलिए आया ब्रह्मचारी,
देश उद्धारक पर उपकारी।
बार-बार जाऊँ बलिहारी,
एक बार फिर भारत आए।

(टंकारा समाचार)

—अजय, टंकारा वाला

अन्धविश्वास की दुनिया

कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन।
देखकर उनकी जहालत, कुन्द हो जाता है मन॥

इनकी बुद्धि पर न जानें, कैसा परदा पड़ गया।
पूजते हैं उसको जाकर, जहाँ पत्थर गड़ गया॥
जो चढ़ाया पत्थर पर, उनको कुत्ता खा गया।
खा के कुत्ते ने वहाँ, पेशाब अपना कर दिया॥
घर में भूखे-प्यासे बैठे हैं, बहुत से वृद्धजन।
उनकी कुछ परवाह नहीं, चाहे निकल जाये दम।
कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन॥
नित्य पढ़ते हैं जो अखबारों में अपना राशिफल।
तांत्रिक इनको फँसा लेते हैं करके कपट-छल।
भूतनी या भूत के चक्कर में आ जाते हैं ये जन,
लूट लेते हैं इनका मान-मर्यादा व धन।
अन्धविश्वासों में पड़कर, धक्के खाते हैं सज्जन।
कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन॥
घेर लेती हैं इन्हें जब, कोई विपदा आकर।
दूर करवाते हैं उसको झाड़ कर-फूँक कर।
गंडे और ताबीज का भी जब न होता है असर।
पण्डित जी से पूछते हैं, कौन-सा है यह कुफर।
साफ बतलाता है पण्डित, कोई देवता नाराज है।
उसको खुश करना ही इसका एकमात्र इलाज है।
गंगाजी में जाके नहाओ और चढ़ाओ धन सुमन।
कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन।
देखकर उनकी जहालत, कुन्द हो जाता है मन॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

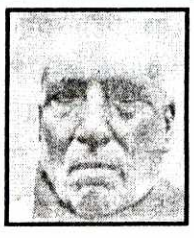
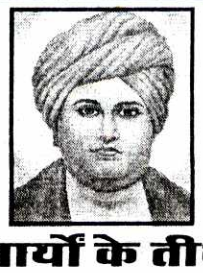

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

आत्मा का दर्शन

-: वेद-मन्त्र :-

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्।
तद्विदच्छर्यणावति॥ (साम० 914)

अर्थ—(पर्वतेषु) मेरुदण्ड में स्थित चक्रों में (अपश्रितम्) स्थित (अश्वस्य) शरीर में व्याप्त आत्मा का (यत् शिरः) जो मुख्य स्थान है (तत् इच्छन्) उसे जानने की इच्छा वाले योगी ने उसे (शर्यणावति) हृदय में (विदत्) प्राप्त किया।

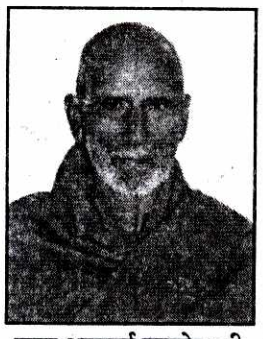
पूज्य आचार्य बलदेव जी

आत्मा का स्थान कहाँ है? और आत्मा विभु है या परिच्छिन्न, इसमें अनेक मत हैं। यदि आत्मा को विभु माने तो जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता। इसलिये जीव का स्वरूप अल्पज्ञ, अल्प अर्थात् सूक्ष्म है और वह परिच्छिन्न है।

आत्मा का निवास स्थान हृदय है। इसमें कुछ विद्वान् मस्तिष्क गत हृदय और कुछ वक्षस्थल में दोनों स्तनों के मध्य में स्थित हृदय को ही उसका स्थान मानते हैं। स्वामी दयानन्द जी की भी यही मान्यता है। सामान्य रूप में जाग्रत अवस्था में आत्मा मस्तिष्क गत हृदय में मन, बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियों के साथ सक्रिय रहता है। यह उसका कार्यालय है जहाँ से वह इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करता रहता है।

सुषुप्ति अवस्था में आत्मा लोहित पिण्ड हृदय में हिता नाम की सूक्ष्म नाड़ियों में विश्राम करता है। बृहदारण्यकोपनिषद् (अ० 4.2.2) में आये इस प्रकरण के अनुसार सुषुप्ति में जीवात्मा का दोनों स्तनों के मध्य विराजमान हृदय में ही स्थान होता है और वे इसे ही हृदय मानते हैं, मस्तिष्क गत को नहीं। स्वप्नावस्था में उसका स्थान प्राण होते हैं। जाग्रत एवं स्वप्न में स्वयं ज्योतिरूप आत्मा इन्द्रियों के विषयों को प्रकाशित करता है और सुषुप्ति में स्वयं ज्योतिरूप में विराजता है।

जैसे देहळी पर रखा दीपक घर के बाहर और भीतर दोनों स्थानों को प्रकाशित करता है वैसे ही एक स्थान पर रहता हुआ आत्मा सारे शरीर के सुख-दुःखादि की अनुभूति करता रहता है। अस्तु।

मन्त्र कहता है **इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः** इस आत्मा के शीर्ष अर्थात् मुख्य स्थान को जानने की इच्छा वाला योगी **पर्वतेष्वपश्रितम्** मेरुदण्ड में पर्वताकार जो 31 कशेरूकायें हैं उनमें जो मूलाधार से सहस्रार तक जो चक्र हैं प्रथम, उनमें ध्यान को एकाग्र करता है। उसकी यात्रा मूलाधार चक्र से प्रारम्भ होती हुई क्रमशः स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा और फिर सहस्रार चक्र में जाकर समाप्त होती है। जहाँ उसे प्रकाश की अनुभूति होती है और उसकी सहायता से वह मन, बुद्धि, इन्द्रियों का साक्षात्कार करता हुआ हृदय में ध्यान को केन्द्रित कर **शर्यणावति तद् विदत् शर्यणावत्** अर्थात् हृदय में आत्मा-परमात्मा दोनों का साक्षात्कार कर लेता है।

पूर्व में कहे गये चक्र सभी चेतना के केन्द्र हैं। जिनमें ध्यान करने से चक्रों का जागरण होता है। इसे दुर्ग के भीतर जाने का मार्ग भी कहते हैं। एक चक्र प्रकाशित हो आगे वाले चक्र का मार्ग प्रशस्त कर देता है। आत्मा का स्वरूप परिच्छिन्न होने से उसकी सर्वत्र अव्याहत गति है अर्थात् बेरोक-टोक वह शरीर में कहीं भी जा सकता है। परन्तु जहाँ उसका गमनागमन और कार्य करने का अथवा विश्राम करने का स्थान है, मिलन तो वहीं पर ही होगा। हृदयाकाश में अंगुष्ठ प्रमाण स्थान है जहाँ आत्मा-परमात्मा दोनों व्याप्य व्यापक हो रहे हैं। जब किसी अधिकारी से सामान्य बात या कार्य सम्बन्धी विचार करना हो तो कार्यालय उपयुक्त स्थान है और जब निजी जीवन या आत्मिक सम्बन्ध में विचार-विमर्श करना हो तब घर में विश्राम के समय मिलने का समय अच्छा माना जाता है। इसी भाँति ध्यान गहराई और आत्मिक अनुभूति के लिये शर्यणावति अर्थात् हृदय में ही ध्यान-धारणा को बनाना होगा। इसके अभाव में पर्वतों की घाटियों और गहरी खाइयों के चक्र ही लगाने पड़ सकते हैं। सीधा मार्ग तो जो यहाँ बतलाया है, वह यही है। (वेद-स्वाध्याय से साभार)

—आचार्य बलदेव

हमारा प्राचीन भारत

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

आर्यावर्त्त देश 'स्वर्ण-भूमि' कहलाता था—

यह आर्यावर्त्त है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिये इस भूमि का नाम 'स्वर्ण-भूमि' है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है.....जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि जो पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसके लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

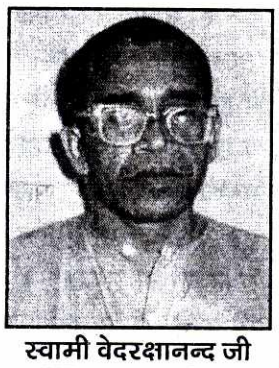
स्वामी वेदरक्षानन्द जी

(महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश समु० 11)

भारत की प्राचीन सर्जरी—

एक अपूर्व बात इस समय स्मरण हुई है (मैं) वह आपको सुनाता हूँ। एक अंग्रेजी विद्वान् डॉक्टर हमको मिला। उसने मुझसे कहा कि हमारे प्राचीन आर्य लोगों में डाक्टरी औजार का कुछ भी प्रचार न था। तब मैंने सुश्रुत का 'नेत्र अध्याय' जिसमें कि बारीक से बारीक औजार का वर्णन है निकालकर उसे दिखलाया। तब उसको ज्ञात हुआ कि आर्य लोग चिकित्सा में बड़े चतुर थे। उन्हें औजारों की विद्या भी उत्तम ज्ञात थी।

(महर्षि दयानन्द, पूना का 10वां व्याख्यान इतिहास विषय)

दरिद्रियों के घरों में भी विमान होते थे—

उपरिचर नामक राजा था। वह सदा भूमि को स्पर्श न करता हुआ हवा ही में फिरा करता था। पहिले के जो लोग लड़ाइयाँ करते थे, उन्हें विमान रचने की विद्या भलीप्रकार विदित थी। मैंने भी एक विमान रचना की पुस्तक देखी है। भाई! उस समय दरिद्रियों के घर में भी विमान होते थे।

(महर्षि दयानन्द, पूना का 5वां व्याख्यान वेदविषय)

काशी के मान मन्दिर में शिशुमार चक्र—

देखो! काशी के मान मन्दिर में शिशुमार चक्र को, कि जिसकी पूरी रक्षा भी नहीं रही है, तो भी कितना उत्तम है कि जिसमें अब भी खगोल का बहुत-सा वृत्तान्त विदित होता है। (महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश समु० 11)

एक घंटे में साढ़े सत्ताईस कोश चलने वाला घोड़ा—

घट्येकया क्रोशदशैकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चारु गत्या।
वायुं ददाति व्यजनं सुपुष्कलं विना मनुष्येण चलत्यजस्त्रम्॥

राजा भोज के राज्य में और समीप में ऐसे ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार (का) एकयान कलायत्रयुक्त बनाया था जो कि एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोस और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोस जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में चलता था।

स्वयं चलने वाला पंखा—

दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि विना मनुष्य के चलाये, कलायत्र बल से नित्य चला करता तथा पुष्कल वायु देता था। ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते। (सत्यार्थप्रकाश समु० 11)

क्या भारत में भी जहाज चलते थे?

समुद्र में नौकाओं पर कर लेने का विधान मनुस्मृति में दिखलाकर ऋषिवर लिखते हैं—जो लोग कहते हैं कि प्रथम जहाज नहीं चलते थे, वे झूठे हैं।

(सत्यार्थप्रकाश समु० 6)

श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पाताल में अश्वतरी अर्थात् जिसको अग्नियान नौका उस पर बैठके पाताल में जाके महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को ले आये थे। (सत्यार्थप्रकाश समु० 10)

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये। सम्पर्क—01262-216222

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ (यजु० अ० 1/मं० 5)

व्याख्यान-1

इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सब मनुष्य लोग ईश्वर के सहाय की इच्छा करें, क्योंकि उसके सहाय के बिना धर्म का पूर्ण ज्ञान और उसका अनुष्ठान पूरा कभी नहीं हो सकता।

हे व्रतपते! सत्यपते परमेश्वर! (व्रतं) मैं जिस सत्यधर्म का अनुष्ठान करना चाहता हूँ उसकी सिद्धि आपकी कृपा से ही हो सकती है। शतपथ ब्राह्मण में इस मन्त्र का अर्थ लिखा है कि **''जो मनुष्य सत्य के आचरणरूप व्रत को करते हैं वे 'देव' कहाते हैं और जो असत्य का आचरण करते हैं उनको मनुष्य कहते हैं।''** इसलिए मैं सत्यव्रत का आचरण करना चाहता हूँ। (तच्छकेयं) मुझ पर आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे मैं सत्यधर्म का अनुष्ठान पूरा कर सकूँ। (तन्मे राध्यताम्) उस अनुष्ठान की सिद्धि करने वाले एक आप ही हो। सो कृपा से सत्यरूप धर्म के अनुष्ठान को सदा के लिए सिद्ध कीजिए। (इदमहमनृतात्) सो यह व्रत है जिसको मैं निश्चय से चाहता हूँ कि उन सब असत्य कामों से छूट के सत्य के आचरण करने में सदा दृढ़ रहूँ।

परन्तु मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यों में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करें। उसके उपरान्त ईश्वर के सहाय की इच्छा करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि मनुष्यों को अपने पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिये। जैसे कोई मनुष्य आँख वाले पुरुष को ही किसी चीज को दिखला सकता है, अंधे को नहीं। इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव, पुरुषार्थ से धर्म को करना चाहता है, उस पर ईश्वर भी कृपा करता है अन्य पर नहीं। क्योंकि ईश्वर ने धर्म को करने के लिये बुद्धि आदि साधन जीव के साथ रखे हैं। जब उनसे पूर्ण पुरुषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि सब जीव कर्म करने में स्वाधीन और पापों के फल भोगने में कुछ पराधीन हैं। (ऋ.भा.भू. वेदोक्तधर्मविषय)

व्याख्यान-2

हे सच्चिदानन्द स्वप्रकाशस्वरूप ईश्वराग्ने! ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासादि सत्यव्रतों का आचरण मैं करूँगा। सो इस व्रत को आप कृपा से सम्यक् सिद्ध करें तथा मैं अनृत=अनित्य देहादि पदार्थों से पृथक् होके इस यथार्थ=सत्य जिसका कभी व्यभिचार=विनाश नहीं होता, उस विद्यादि लक्षण धर्म को प्राप्त होता हूँ। इस मेरी इच्छा को आप पूरी करें जिससे मैं सभ्य, विद्वान्, सत्याचरणी आप की भक्तियुक्त धर्मात्मा होऊँ। (आर्याभिविनय)

पदार्थ (अन्वय सहित)

हे (व्रतपते) सत्यभाषणादि व्रतों के पालक! (अग्ने) सत्यधर्म के उपदेशक ईश्वर! (अहम्) धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने की इच्छा वाला मैं जो (इदम्) इस व्रत को (अनृतात्) मिथ्याभाषण, मिथ्याचरण, मिथ्या बात को मानने से अलग होकर (सत्यम्) जो वेद विद्या, प्रत्यक्षादि प्रमाणों, सृष्टिक्रम, विद्वानों का संग, श्रेष्ठ विचार और आत्मशुद्धि के द्वारा जो भ्रान्ति से रहित, सबका हितकारक, तत्त्व-निष्ठ सत्प्रभव है और जो अच्छी प्रकार परीक्षा करके निश्चय किया जाता है, जो (व्रतम्) सत्य भाषण, सत्याचरण, सत्य मानना रूप व्रत है उसका (चरिष्यामि) पालन करूँगा (तत् मे) मेरे उस व्रत का अनुष्ठान और पूरा होना आपकी कृपा से (राध्यताम्) सिद्ध हो। जिसे (उपैमि) जानने, प्राप्त करने व आचरण में लाने के लिए (शकेयम्) समर्थ होऊँ (तत्) वह व्रत भी सब आपकी कृपा से (राध्यताम्) सिद्ध हो।

(ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 1/मं० 5)

भावार्थ—ईश्वर सब मनुष्यों के पालन करने योग्य धर्म का उपदेश करता है जो न्याय, पक्षपातरहित, सुपरीक्षित, सत्य लक्षणों से युक्त, सर्वहितकारी, इस लोक व परलोक के सुख का हेतु है, वही धर्म सब मनुष्यों को सदा आचरण करने योग्य है और जो इससे विरुद्ध अधर्म है उसका आचरण कभी किसी को नहीं करना चाहिए। इस प्रकार सब प्रतिज्ञा करें—हे परमेश्वर! हम वेदों में आपसे उपदिष्ट इस सत्यधर्म का आचरण करना चाहते हैं। यह हमारी इच्छा आपकी कृपा से अच्छी प्रकार सिद्ध होवे। जिससे हम अर्थ, काम, मोक्ष रूप फलों को प्राप्त कर सकें और जिससे अधर्म को सर्वथा छोड़कर अनर्थ, कुकाम, बन्धरूप दु:ख फल वाले पापों को छोड़ने और छुड़ाने में समर्थ होवें।

जैसे आप सत्यव्रतों के पालक होने से व्रतपति हैं वैसे ही हम भी आपकी कृपा से, अपने पुरुषार्थ से यथाशक्ति सत्य व्रत के पालक बनें। इस प्रकार सदा धर्म करने के इच्छुक, शुभकर्म करने वाले होकर सब सुखों से युक्त व सब प्राणियों को सुख देने वाले बनें। ऐसी इच्छा सब सदा किया करें।

(ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 1/मं० 5)

संकलन व संपादन : **स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)**
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जिला साबरकांठा
गुजरात-383307 फोन : 02770-287418, 287518

धर्म-शिक्षकों की आवश्यकता

बीकानेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय (**RSV**) और उससे सम्बन्धित अन्य कुछ विद्यालयों में वैदिक धर्म, मानवीय जीवन मूल्य, राष्ट्रभक्ति, नैतिक शिक्षा, संस्कृत, योग, आसन-प्राणायाम, व्यायाम, सुरक्षा उपाय आदि को सिखाने-पढ़ाने हेतु 5 अध्यापक (स्त्री/पुरुष) की आवश्यकता है।

शैक्षणिक योग्यता-स्नातक/स्नातकोत्तर शास्त्री/आचार्य या समकक्ष। आर्यसमाज के गुरुकुल में पढ़े हुए, आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों-सिद्धान्तों को जानने-मानने-श्रद्धा रखने वाले। बी.एड/शिक्षा शास्त्री/एम.एड. को वरीयता।

साथ में विशेष योग्यता-आर्यवीर दल शिक्षक, योग-प्राकृतिक चिकित्सा की कोई उपाधि प्राप्त को वरीयता। पति-पत्नी दोनों शिक्षक हों तो भी वरीयता।

वय-25 से 40 वर्ष तक। (यदि स्वास्थ्य अच्छा है तो अन्तिम आयु सीमा में छूट सम्भव)।

वेतन-दस से बीस हजार (योग्यतानुसार) प्रतिमाह।

चयन से पूर्व लगभग 2 माह का प्रशिक्षण (13 अक्तूबर से 7 दिसम्बर 2013) प्राप्त करना अनिवार्य है। प्रशिक्षण हेतु अधिकतम दस व्यक्तियों का चयन होगा। प्रशिक्षण में सफल व्यक्तियों में से 5 का चयन बीकानेर में सेवा हेतु किया जाना है। शेष सफल व्यक्तियों के लिए भी अन्यत्र सेवा प्राप्ति की संभावना है। प्रशिक्षण देहरादून, अजमेर, रोजड़ व बीकानेर में दिया जायेगा। प्रशिक्षण व प्रशिक्षण काल में निवास-भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। घर व शिविर स्थल के बीच आवागमन मार्ग व्यय प्रशिक्षणार्थी को स्वयं वहन करना है।

आवेदन की अन्तिम तिथि-30 सितम्बर 2013

सम्पर्क-प्राचार्य, राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर।

ईमेल-rsvjnv[illegible]gmail.com दूरभाष-09829207546, 09829[illegible]

इच्छुक व्यक्ति सादा कागज पर अपने समस्त सम्बन्धित विवरणों को लिखकर, अपने चित्र व प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपि सहित **ईमेल** से भेज देवें।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज सालवन करनाल	16 से 18 सितम्बर 2013
2.	आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर (रेवाड़ी)	21 से 22 सितम्बर 2013
3.	आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड, जीन्द	26 से 29 सितम्बर 2013
4.	आर्ष भगवती कन्या गुरुकुल जसात, गुड़गांव	28 से 29 सितम्बर 2013
5.	आर्यसमाज जांट (रेवाड़ी)	2 अक्तूबर 2013
6.	आर्यसमाज बेगा, जिला सोनीपत	2 से 4 अक्तूबर 2013
7.	आर्यसमाज जलियावास, जिला रेवाड़ी	5 से 6 अक्तूबर 2013
8.	आर्यसमाज गोहानामण्डी, जिला सोनीपत	9 से 13 अक्तूबर 2013
9.	आर्यसमाज बीगोपुर, जिला महेन्द्रगढ़	12 से 13 अक्तूबर 2013
10.	सरल आध्यात्मिक शिविर स्थान-गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)	28 अक्तूबर से 1 नवम्बर 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

मा० सोमनाथ आर्य बने प्रधान

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव का वार्षिक अधिवेशन रविवार 25.8.2013 को श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री बलदेवराज गुगलानी की अध्यक्षता में निर्वाचन प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न हुआ जिसमें **मा० सोमनाथ आर्य** को प्रधान चुना गया। मा० सोमनाथ पहले 10 वर्ष महामन्त्री एवं तीन वर्ष तक प्रधान रह चुके हैं। वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकारिणी सदस्य, आर्यसमाज अर्जुननगर के संरक्षक, आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय के महामंत्री तथा वैदिक कन्या उच्च विद्यालय के उपप्रधान के रूप में कार्य कर रहे हैं।

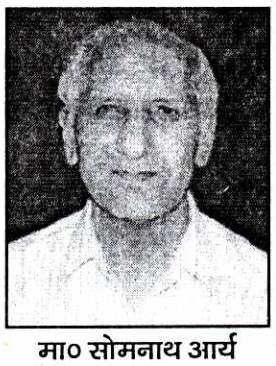

मा० सोमनाथ आर्य

गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया में मा० सोमनाथ को 33 मत तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान व आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य को मात्र 22 मत प्राप्त हुए। आर्यसभासदों ने करतल ध्वनि से मा० सोमनाथ के प्रधान बनने पर स्वागत किया तथा सभी आर्यबन्धुओं में खुशी की लहर दौड़ गई। प्रधान चुने जाने पर मा० सोमनाथ ने ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने तथा सभी को संगठन से जोड़कर ऋषिस्वप्न को साकार करने का पूर्णरूपेण संकल्प लिया। सभा के अधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य बनाने का अधिकार प्रधान जी को दिया।

वेदप्रचार यात्रा सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी के सपनों को साकार करने के लिए, आर्यसमाज निहालोठ के तत्त्वावधान में कप्तान जगराम आर्य के नेतृत्व में वेदप्रचार पदयात्रा 16 अगस्त 2013 से 22 अगस्त तक ग्राम ढाणी मालीयान, बूढवाल, रायपुर, गोठड़ी, नियामतपुर, मोरुण्ड, आसरावास, नायन, थनवास, बनिहाड़ी, कालबा, नांगल चौधरी, मोहनपुर और नांगल कालिया में सम्पन्न हुई। इन गाँवों में 100 किलो घी का हवन हुआ सैकड़ों युवक और युवतियों को जनेऊ दिए और उनके दुर्व्यसन छुड़ाए। सत्यार्थप्रकाश, आर्य सत्संग गुटका, ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट करके प्रत्येक ग्राम में वैदिक पुस्तकालय का उद्घाटन किया एवं आर्यसमाज की स्थापना की। एक दिन पहले इन गाँवों में सम्पर्क करके कार्यक्रम की जिम्मेवारी सौंपते हैं। गाँव की गली-गली, द्वार-द्वार पर जाकर जन-जन को वेदप्रचार की सूचना देते हैं। सभी ग्रामीण अपने घर से घृत, सामग्री और प्रसाद लाते हैं। सार्वजनिक स्थान पर पहले हवन करते हैं, पश्चात् भजन और उपदेश करते हैं। कालबा निवासी श्री इन्द्राज ने अपनी तरफ से 100 सत्यार्थप्रकाश वितरण करने का संकल्प किया है। ग्राम मोहनपुर में एक युवक राकेश आर्यसमाज की आलोचना कर रहा था, वेदप्रचार सम्पन्न होने पर युवक राकेश ने बताया कि आर्यसमाज तो चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त सबका भला चाहता है। मुझे बहुत भ्रान्तियां थी कि आर्यसमाज भगवान और देवताओं को नहीं मानता पर प्रचार सुनने पर मेरी सभी भ्रान्तियों का निवारण हो गया है। अब मैं भी आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करूँगा। इन गाँवों में नमस्ते का प्रचार हो गया है। प्रचार-प्रसार करने से लोग वैदिक सिद्धान्तों को समझ जाते हैं। वेदप्रचार पदयात्रा में सहयोग देने वाले पण्डित रमेश शास्त्री, मा० अमृतलाल आर्य, सत्यवीर आर्य थानेदार रामचन्द्र मेघोत हाला, बलदेवसिंह चहल, राजकुमार आर्य धोलेड़ा, फूलचन्द, डॉ० मुरारी बूढवाल हनुमान आर्य अमरपुरा आदि।

गाँव-गाँव में जाकर वेदप्रचार करने से स्वतन्त्रता दिवस के शुभ अवसर पर उपायुक्त ने प्रसन्न होकर कप्तान जगराम आर्य को सम्मानित किया।

—कप्तानसिंह आर्य, संचालक वेदप्रचार पदयात्रा

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है ?

तो फिर भला देर किस बात की ? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक

दूरभाष : 01262-216222

आर्यसमाज के विशाल बगीचे में सवा सौ से अधिक नई पौध आरोपित की

यह कार्यक्रम स्व० महाशय महाराम जी की स्मृति में आयोजित किया गया।

मुख्यातिथि को सम्मानित करते सर्वश्री रामकुंवार, चन्द्रपाल, रतीराम आदि गणमान्य आर्यजन।

झज्जर 25.8.2013। यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का विशेष आकर्षक बिन्दु रहा--एक ही मौहल्ले भट्टी गेट झज्जर के नर्सरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक के सवा सौ से अधिक बच्चों ने गायत्री महामन्त्र का भावार्थ कविता के रूप में **'प्रभु तूने हमें उत्पन्न किया....श्रेष्ठ मार्ग पर चला।'** सुनाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने कहा—ये बच्चे आर्यसमाज के विशाल बगीचे में नई पौध हैं और भविष्य में वटवृक्ष का रूप धारण करेंगे। यज्ञ समिति झज्जर का यह कार्य वास्तव में रचनात्मक है और सराहनीय है। महिला आर्यसमाज झज्जर की प्रचारमन्त्री श्रीमती रीना जी आर्या यज्ञ ब्रह्मा रहीं तो भारत स्वाभिमान झज्जर के विद्यार्थीगण वेदमन्त्र पाठी रहे। श्रीमती ममता जी एवं श्री रामनिवास जी मुख्य यजमान रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्र० सत्यनारायण जी खेड़ीजट रहे। आर्यवीर दल के कर्मठ युवा मुख्यातिथि ने कहा—जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करता है उसका सर्वांगीण विकास होता है। जो व्यक्ति ब्राह्ममुहूर्त में उठकर ईश्वर की उपासना और नियमित शारीरिक व्यायाम करने के साथ-साथ सात्त्विक आहार लेता है वही ब्रह्मचर्य पालन करने में सफल होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष पं० रमेशचन्द्र कौशिक रहे।

मंच का सफल संचालन विजय आर्य ने किया। श्री रामकुंवार जहांगीरपुर, श्री चन्द्रपाल जहाजगढ़ माजरा, पं० जयभगवान आर्य, विक्रम, सत्यदेव आर्य, श्री भगवान सिंह, लाला प्रकाशवीर, शिवनारायण गाबा, मा. पनसिंह, श्रीमती सुमित्रा, माता टीडोदेवी, माता फुलोदेवी दलाल, सोनिया आर्या आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। महाशय रतीराम आर्य ने सभी का आभार प्रकट किया।

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

बहादुरगढ़-स्थानीय आत्मशुद्धि आश्रम में 21 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं ऋग्वेद पारायण यज्ञ किया जाएगा। शिविर के निर्देशक आचार्य राजहंस मैत्रेय होंगे। पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी की देखरेख में सुचारु रूप से चलेगा।

आसन एवं प्राणायाम सत्यपाल वत्स की देखरेख में करवाए जायेंगे। यज्ञ-ब्रह्माचार्य विद्यादेव तथा वेदपाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. मुमुक्षु, आचार्य खुशीराम, स्वामी रामानंद, आचार्य रवि, सत्यपाल मधुर, श्रीमती रामदुलारी आदि द्वारा उपदेश एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम रहेगा। महिला जागृति सम्मेलन 30 सितम्बर को सायंकाल, योग सम्मेलन 1 अक्टूबर को प्रातः तथा चरित्र निर्माण सम्मेलन 1 अक्टूबर को सायंकाल होगा। 2 अक्टूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे होगी। इस अवसर पर जो भी यजमान बनना चाहें वे 09416054195 पर सम्पर्क कर निश्चित करें।

बाहर से आने वालों के लिए भोजन एवं निवास प्रबंध निःशुल्क रहेगा। आश्रम के प्रवक्ता ने सभी से अपील की है कि इस धार्मिक कार्य एवं शिविर में अधिक से अधिक भाग लेकर जीवन को धन्य बनावें।

—सत्यानन्द आर्य प्रधान (ट्रस्ट)

'भजन-भास्कर' पुस्तक का विमोचन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० चन्द्रभान आर्य (सम्पादक शांतिधर्मी) की पुस्तक '**भजन-भास्कर**' का विमोचन जिला वेदप्रचार मण्डल जींद द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में किया गया। ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ है। हरियाणा के इतिहास में यह पहला अवसर है जब किसी आर्य भजनोपदेशक की पुस्तक के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा अनुदान दिया गया है। यह समस्त आर्यजगत् के लिए गर्व का विषय है। पं० चन्द्रभान आर्य 1951 से भजनोपदेशक के रूप में और 1998 ई० से शांतिधर्मी के संपादक व प्रकाशक के रूप में आर्यजगत् की सेवा कर रहे हैं। ऊपर चित्र में पुस्तक का विमोचन करते हुए श्री जयवीरसिंह आर्य अतिरिक्त उपायुक्त जींद, गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी, स्वामी सोमानन्द जी, श्री श्रीचन्द जैन जी, मा० कपूर सिंह आर्य व पं० चन्द्रभान आर्य। कार्यक्रम का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपप्रधान प्रो० ओमकुमार आर्य कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

—वानप्रस्थी अत्तरसिंह स्नेही, सभा पुस्तकाध्यक्ष

स्मृति पर्व का आयोजन

दर्शन भाष्यकार, शास्त्रार्थमहारथी, वीतराग, कई पुस्तकों के महान् लेखक, विद्वान्, संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी की निर्वाण शती के अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत की ओर से आगामी 14.9.2013 शनिवार को डीएवीएम पब्लिक स्कूल सैक्टर-15, सोनीपत में सायं 4 बजे से 7 बजे तक स्मृति पर्व का आयोजन किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान, प्रख्यात संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर) समारोह की अध्यक्षता करेंगे। आर्यसमाज इतिहासवेत्ता, ग्रन्थप्रणेता, वैदिक मिशनरी प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु (अबोहर) तथा वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ पं० रामचन्द्र आर्य जी (सोनीपत) इस स्मृति पर्व पर स्वामी दर्शनानन्द जी के जीवन के विभिन्न कर्तृत्वों पर प्रकाश डालेंगे तथा जनसमूह को उनके जीवन से प्रेरणाएं प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन का सत्प्रयास करेंगे। डीएवी स्कूल सैक्टर-15 की छात्रा कुमारी वृद्धि के सुमधुर भजन भी इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण होंगे।

—सुदर्शन आर्य, महामन्त्री

श्रद्धाञ्जलि समारोह सम्पन्न

दिनांक 21 अगस्त 2013 को गुरुकुल आर्यनगर में गुरुकुल के लेखा निरीक्षक ब्र० दीपकुमार आर्य की बुआ स्व० श्रीमती भरपाई देवी की 17वीं पुण्यतिथि पर यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन किया गया। बुआ जी को श्रद्धांजलि भी दी गई। उपाचार्य राजीव के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने ईश्वर भक्ति के भजन गाये। सभा के पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न हुआ। आचार्य पण्डित रामस्वरूप शास्त्री ने मंच का संचालन किया और बुआ जी के जीवन की प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। श्री सत्यवान शास्त्री, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, गुरुकुल के आचार्य मानसिंह पाठक, वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही आदि ने बुआ जी को श्रद्धाञ्जलि दी। साथ में विद्यार्थियों के कर्त्तव्य, संस्कारों का महत्त्व, वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी। बुआ जी को सौम्य स्वभाव, यज्ञप्रेमी, दृढ़ ईश्वर विश्वासी, ब्र० दीपकुमार को गोद लेकर ब्र० की प्रेरणा देकर समाज को दिया। श्री धर्मपाल साहू, रणवीर अध्यापक, संजीव अध्यापक, दांगी साहब आदि तथा महिलाओं व गुरुकुल के छात्रों ने भाग लिया। नए छात्रों का यज्ञोपवीत संस्कार भी किया गया।

—सत्यप्रकाश मित्तल, उपमंत्री

यमुनानगर के आचार्य का सम्मान

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गुरुकुल शादीपुर के आचार्य **डॉ० राजकिशोर शास्त्री** एम.ए. 'दर्शन शास्त्र' एवं पी.एच-डी. को दिनांक 13 अगस्त 2013 को हरयाणा प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने हरयाणा राज्य भवन चण्डीगढ़ में '**विद्यामार्तण्ड पं० सीताराम शास्त्री आचार्य सम्मान**' से श्री राजकिशोर जी को विभूषित किया, जिसमें श्री पहाड़िया जी ने 51000/- इकावन हजार रु० का चैक सहित दुशाला प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृतिचिह्न देकर शिक्षा जगत् में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने पर उनका मान बढ़ाया।

इस उपलब्धि पर यमुनानगर निवासियों को श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर की ओर से बहुत-बहुत बधाई होवें।

—डॉ. गेन्दाराम आर्य मन्त्री, श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय, शादीपुर, यमुनानगर (हरयाणा)

आर्यसमाज फतेहपुर (कैथल) का निर्वाचन

संरक्षक-श्री हरीकुमार वालिया, श्री चतुर्भुज शर्मा, मुख्यसलाहकार-श्री अनिल गुप्ता (मै० कालूबक्शी), प्रधान-श्री गुरमेहरसिंह वालिया 'एडवोकेट', वरिष्ठ उपप्रधान-श्री इन्द्रसिंह 'धीमान', उपप्रधान-प्रेमचन्द, महिला उपप्रधान-श्रीमती रीता आहलुवालिया, मंत्री-श्री गुरचरणसिंह, सहमंत्री/धर्माधिकारी-श्री संतोष कुमार धीमान, कोषाध्यक्ष-बृजभूषण मित्तल, संगठन/प्रचारमंत्री-अशोक कुमार 'वालिया'।

—मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर

आर्य-संसार

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल गुरुकुल झज्जर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संयुक्त संयुक्त तत्त्वावधान एवं आचार्य विजयपाल जी के मार्गदर्शन में स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान्, नशामुक्त एवं योगयुक्त दिव्य समाज निर्माण हेतु आचार्य चन्द्रदेव के नेतृत्व में हरयाणा के गांव-गांव में आसन-व्यायाम-प्राणायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण, स्वास्थ्यसुधार शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में 30 अगस्त से 3 सितम्बर तक सिलानी गाँव में शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में गांव के लोगों ने विशेष रुचि दिखाई और भरपूर सहयोग दिया।

आचार्य चन्द्रदेव ने शिविरार्थियों को दुर्व्यसन, पाखण्ड, अंधविश्वास, कुरीतियों से बचकर संस्कारवान, सदाचारी, संयमी एवं चरित्रवान् बनने की प्रेरणा दी। शिविर में शिविरार्थियों के शारीरिक विकास के लिए सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, दण्ड-बैठक एवं आत्मरक्षा आदि का अभ्यास करवाया गया। चारित्रिक विकास के लिए शिविरार्थियों को धूम्रपान व अन्य नशों से दूर रहकर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली छोटी-छोटी गलत आदतों को त्याग कर उच्च व सादा जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसके साथ-साथ उन्हें माता-पिता व गुरुजनों का आदर करने, स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने, भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रति जागरूक बनने की प्रेरणा दी। शिविर में लगभग 250-300 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के अन्तिम दिन 3 सितम्बर को सायं 5 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें गांव के लोगों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस अवसर पर 15-20 माताओं-बहनों एवं सैकड़ों युवाओं ने भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रतीक यज्ञोपवीत को धारण किया। यज्ञोपवीत को धारण करते हुए युवाओं ने माता-पिता व गुरुजनों की सेवा करने तथा दुर्गुणों-दुर्व्यसनों से दूर रहने का संकल्प लिया। शिविर में मनीष शास्त्री ने सहयोगी व्यायाम शिक्षक के रूप में विशेष भूमिका निभाई। शिविर के अंतिम दिन यज्ञोपरान्त सभी ग्रामवासियों ने आचार्य चन्द्रदेव का हार्दिक धन्यवाद किया और समय-समय पर गांव में विभिन्न कार्यक्रमों में बुलाकर युवाओं को प्रेरणा दिलवाने का संकल्प लिया।

—सतीशार्य, कार्यालय प्रभारी
रेवाड़ी रोड, गुरुकुल झज्जर

श्रावणी पर्व पर खेड़की (महेन्द्रगढ़) में यज्ञ का आयोजन

दिनांक 20.8.2013 को श्री बनवारी लाल 77 वर्षीय बुजुर्ग ने अपने घर पर यज्ञ करवाया जिसके ब्रह्मा श्री सोहनलाल आर्य थे। यज्ञ के अवसर पर आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़ के सभी सदस्य उपस्थित हुए और पर्याप्त संख्या में ग्रामवासियों ने भाग लिया।

सभी उपस्थित जनों ने वेदमार्ग पर चलने का व्रत लिया। यजमान श्री बनवारीलाल ने ओ३म् के जाप करने का व्रत लिया एवं सभी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का संकल्प लिया। 51 रुपये का दान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दिये एवं 51 रुपये आर्यसमाज खेड़की को दिये। यज्ञोपरान्त ब्रह्मभोज करवाया गया। **—बलवीरसिंह मंत्री आर्यसमाज खेड़की (महेन्द्रगढ़)**

वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही सम्मानित

स्त्री आर्यसमाज मौहल्ला डोगरान हिसार की ओर से रक्षाबन्धन श्रावणी पर्व दिनांक 21.8.13 से 25.8.13 तक बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य सलेकचन्द आर्य उत्तरप्रदेश मुख्य-वक्ता थे। पं० जितेन्द्रदेव भजनोपदेशक उत्तर-प्रदेश थे। यज्ञ के ब्रह्मा पं० रविदत्त शास्त्री थे। उपरोक्त विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन व भजन हुये। समारोह के अध्यक्ष श्री यज्ञदत्त सेतिया थे। मुख्य अतिथि श्रीमती शकुन्तला राजलीवाला, मेयर नगर निगम हिसार थी, विशिष्ट अतिथि श्री भीम महाजन डिप्टी मेयर नगर निगम हिसार थे। स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही का नागरिक अभिनन्दन किया गया। अनेक नर-नारियों ने पुष्पमाला डाली तथा स्त्री आर्यसमाज की ओर से शॉल भेंट किया गया। इस अवसर पर आचार्य पंडित रामस्वरूप शास्त्री, पं० दयानन्द शास्त्री, आचार्य मानसिंह पाठक, पं० दीपचन्द शास्त्री, कैलाशचन्द्र शास्त्री, सत्यपाल आर्य, प्रमोद लाम्बा, अजय ऐलावादी, प्रधाना शन्नोदेवी ठकराल, रामकुमार आर्य आदि उपस्थित थे। डॉ० प्रमोद योगार्थी ने मंच का संचालन किया। **—सीमा मल्होत्रा, स्त्री आर्यसमाज, हिसार**

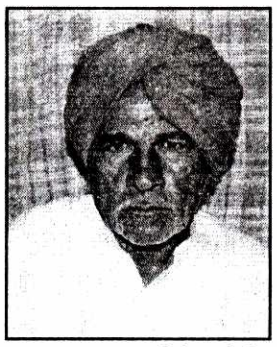

वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही

श्रावणी उपाकर्म पर्व मनाया

आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार की ओर से 26 अगस्त से 1 सितम्बर 2013 तक श्रावणी उपाकर्म पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मबन्धु जी गुजरात, स्वामी श्रद्धानन्द पलवल, आचार्य अर्जुनदेव वर्णी गुड़गांव, आचार्य संदीप सोनीपत, स्वामी सर्वदानन्द, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, पं० रविदत्त शास्त्री आदि विद्वानों के वैदिक सिद्धान्तों तथा राष्ट्ररक्षा पर सारगर्भित प्रवचन हुये। पं० आनन्दमुनि व डॉ० प्रमोद योगार्थी ने मंच का संचालन किया। पं० जितेन्द्रदेव व पं० रामनिवास आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुये।

इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित महानुभावों तथा गोभक्तों को आर्यसमाज की ओर से सम्मानित किया गया। पर्व पर चौ० हरिसिंह सैनी, वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, बदलूराम आर्य, डॉ० रमेश लीखा, प्रिं० जिलेसिंह आर्य, बजरंग लाल आर्य, जसवन्त आर्य, प्रताप शास्त्री, बनवारीलाल बिश्नोई, दौलतराम सैनी, गोपीचन्द आर्य, संतोष आर्य, देवेन्द्र सैनी, रामकुमार आर्य आदि अनेक आर्य उपस्थित थे।

—महावीर सैनी उपप्रधान हिसार

बुद्धिमान् और बुद्धिहीन में अन्तर.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

अर्थात् जो वेद-शास्त्रोक्त और जिसकी प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से परीक्षा की गई हो वा की जाये, वही पक्षपात से अलग न्याय रूप धर्म है। जो तुम लोगों के लिए मेरी (ईश्वर) आज्ञा है उस उसमें अपने आत्मा, प्राण और मन को सब पुरुषार्थ तथा कोमल स्वभाव से युक्त करके सदा सत्य ही में प्रवृत्त रहो।

बुद्धिहीन—उन कार्यों को करेगा जो ईश्वर आज्ञा अर्थात् वेदशास्त्रोक्त धर्म से विरुद्ध है। जैसे-मांस खाना, शराब पीना, पेड़ों को धागे बांधना, मूर्तियों को ईश्वर मान उनकी पूजा करना, माता-पिता का अपमान करना, स्त्री को पैर की जूती समझना, पराये धन पर नियत रखना, छल-कपट, द्वेष भावना से आचरण करने वाला आदि-आदि। भट्टाचार्य जी ने लिखा मांसाहारी में दया नहीं होती, शराबी में सत्य नहीं होता तथा मूर्ख निरक्षर मनुष्य न अपना कल्याण कर सकता है, न संसार का उपकार कर सकता है, अत: ये सब पृथिवी पर भाररूप ही हैं।

ईश्वर ने बहुत ही बहुमूल्य बुद्धि मानव उत्थान के लिए दी है, बुद्धिमान् वही जो ईश्वर आज्ञा में अपनी बुद्धि का सदुपयोग करता है। बुद्धिहीन दुरुपयोग करता है, यही अन्तर है।

निर्वाचन

आर्यसमाज सैंट्रल सैक्टर-15 फरीदाबाद का त्रिवार्षिक चुनाव 26.5.13 को श्री बलवीर सिंह मलिक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा निम्न पदाधिकारी चुने गए—प्रधान-सत्यप्रकाश अरोड़ा, मंत्री-आनन्दस्वरूप चावला, कोषाध्यक्ष-जवाहरलाल आहूजा। **—आनन्द स्वरूप चावला, मंत्री**

www.thearyasamaj.org

श्रावणी पर्व का हमारे जीवन में महत्त्व

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानानां उपासते॥

❑ संजय शास्त्री विद्यावाचस्पति, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

आदरणीय आर्य बन्धुओ, श्रद्धामयी पवित्र माताओ, भारतवर्ष ऋषियों-मुनियों की पावन स्थली होने का गौरव रखता है, हमारे ऋषियों ने समय-समय पर मानव को संस्कारित करते रहने के लिए इन्हें अपना कर्त्तव्य बोध करवाने के लिए अनेक पर्वों, त्यौहारों व उत्सवों की एक परम्परा-सी बनाई है। इन पर्वों, उत्सवों को मनाने की नियमावली जो हमारे ऋषियों ने दी है उनके माध्यम से हम जाने में ही नहीं अनजाने व अनचाहे भी बहुत से उपकार नवनिर्माण व धर्म के उत्थान के कार्य कर जाते हैं जो हमें अपने आप साधारण जीवन की दैनिक व्यस्तताओं की अवस्था में कर पाना सम्भव नहीं हो पाता ऐसे ही पर्वों में श्रावणी पर्व तथा रक्षाबंधन भी एक है। पर्व कहते हैं पूरक तथा ग्रन्थी को। श्रावणी पर्व जीवन में आनन्द भर देता है, जिस प्रकार गन्ने में ग्रन्थियों के कारण ही मधुर रस सुरक्षित रहता है, वैसे ही वैदिक पर्व मनुष्य के जीवन में संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखते हैं।

भारत में चौमासा के नाम से प्रसिद्ध चार महीने ऐसे होते हैं, जिनमें वर्षा के कारण अनेक भूमिगत व जहरीले सर्प-बिच्छू-कानखजूरे आदि अनेक जीव भूमि से बाहर निकल आते हैं, इस अवस्था में सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीनकाल से ही ऋषि-महात्मागण जंगल पर्वतों से बाहर निकलकर नगरों के समीप आकर किसी स्थान को केन्द्र बनाकर आवास करते थे तथा अपने अनुभव स्वाध्याय तथा तप से परिश्रम से साधना से उन्होंने जो ईश्वरीय ज्ञान एकत्र किया होता था उसे वह अपनी सेवा-सुश्रूषा के बदले जन सामान्य में बांटते थे, आर्यसमाजों में भी वही परम्परा स्थापित करते हुए श्रावणी उपाकर्म का विधान किया गया है। इसे श्रावणी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह श्रावण माह भी इन्हीं चार महीनों में आता है। श्रावण मास अत्यधिक वर्षा का महीना होता है।

सभी जलाशय, नदी-नाले न केवल भरे होते हैं, अपितु उफान पर होते हैं। ऐसे में सभी प्रकार के कार्य बाधित होते हैं, चाहे वह कृषि का कार्य हो अथवा व्यापार का। यह उल्लास का पर्व है, उल्लास एक ऐसी सुगन्ध है, जिसे जितना प्रयोग करो, वह बढ़ती ही चली जाती है। यही कारण है कि ऋषियों ने वही सुगंध वर्ष भर के प्रयास से एकत्र की होती है।

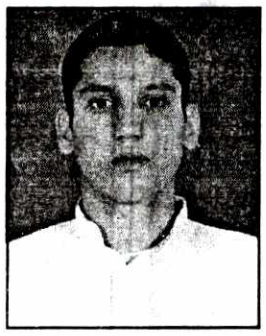

इस पर्व पर वह इसे जनसामान्य में बांट देते हैं, क्योंकि हमारी देश की यही सभ्यता या परम्परा रही है कि जो वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् व तत्त्वदर्शी, योगनिष्ठ, ऋषि-मुनि, महापुरुष अपने ज्ञान से संसार में फैले अन्धकार रूपी प्रकाश को दूर किया करते थे तथा उनको उनके चरित्र का ज्ञान कराया करते थे।

मनु महाराज ने भी कहा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद्ग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याः सर्वमानवाः॥

मैं बताना चाहता हूँ कि यूनान-मिस्र जैसे राष्ट्रों के नष्ट होने पर भी सर्वाधिक प्राचीन यह भारत आज भी न केवल जीवित है, अपितु अब भी विश्व का एक बड़ा भाग इससे मार्गदर्शन पा रहा है। कहने का तात्पर्य है कि श्रावणी नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व मनाया जाता है, इसलिए इसका नाम श्रावणी पर्व है और यह परम्परा आधुनिक नहीं अपितु वैदिक काल से प्रचलित है। श्रावणी पर्व आर्यों-हिन्दुओं का एक महत्त्वपूर्ण पर्व, क्योंकि इसका सीधा संबंध वेदाध्ययन से है। वर्षा ऋतु के चार मास के अन्तर्गत विशेष रूप से वेद पारायण यज्ञों का आयोजन किया जाता है।

सब वर्ण के लोग इस चौमासे के दौरान विश्राम करते हैं, अर्थात् सबके कार्यक्षेत्र में शान्ति होती है, व्यवसाय में भी शिथिलता होती है। वैदिक काल में सब लोग वेद तथा आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय करते थे, कभी प्रमाद नहीं करते थे, कालान्तर में विशेषकर वर्तमान में लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व से महाभारत युद्ध के पश्चात् वेदों के पठन-पाठन में शिथिलता आने लगी। इसका मुख्य कारण वैदिक-विद्वानों तथा श्रद्धालु श्रोताजनों का अभाव होता रहा और परिणाम यह हुआ कि लोगों की स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति लुप्त हो गई, जिसके फलस्वरूप आधुनिक समाज में अनेक स्वार्थियों-लुटेरों ने अनगिनत पाखण्डों को जन्म दिया। अतः भोले-भाले, सीधे-साधे लोगों के दिलों में अनेक अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धाओं जैसे शत्रुओं ने घर कर लिया, यह सब स्वाध्याय की कमी के कारण हुआ।

सज्जनो, आज भी यदि हम सभी जन समुदाय में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत हो जावे तो समाज में फैलते हुए पाखण्डों को रोका जा सकता है तथा धर्म के ठेकेदारों को सबक सिखाया जा सकता है। स्वाध्याय में प्रमाद के कारण ही हम साधु, संत, महात्मा, गुरु इत्यादि की पहचान करने में असमर्थ होते हैं, वर्तमान में हर गली, कूचे में तथाकथित गुरु, संत, साधु, महात्मा आदि अपनी दुकानें चला रहे हैं, ये वक्त केवल ब्रह्मचारी के लिए ही नहीं अपितु सब मनुष्यों पर लागू है, क्योंकि स्वाध्याय के अभाव में मनुष्य विद्या प्राप्ति से वंचित रह जाता है। श्रावणी पर्व में स्वाध्याय का विशेष महत्त्व होने से इस पर्व में वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का प्रारम्भ करना चाहिए जिसका समापन साढ़े चार महीनों के पश्चात् किया जाता है।

आइये मेरे ऋषि-भक्तो, इस पावन श्रावणी पर्व पर अपने ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त उपदेश व मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने जीवन व दूसरों के जीवन को कल्याणकारी बनाने का प्रयत्न करें तथा उनके ऋण से अनृण होने का पुरुषार्थ करें। इन्हीं शब्दों के साथ उन तत्त्वदर्शी वेदमर्मज्ञ विद्वानों के कर्त्तव्य-निष्ठता को नमन करते हुए अपनी लेखनी को विश्राम देता हूँ।

सम्मान समारोह सम्पन्न

हरिद्वार (25/10) "गुरुकुल की स्थापना आर्ष साहित्य की उन्नति, शिक्षा तथा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत स्नातकों के सृजन के लिए की गई। गुरुकुल ने देश को आचरण की शिक्षा दी और आदर्श मानव निर्माण किया।" गुरुकुल में आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओं कार्यकर्त्ताओं के सम्मान समारोह में कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय में गुरुकुल में स्वयं और सरकारी पक्ष से शिथिलता आई है। आगे हमें गुरुकुल की उन्नति के लिए मिलकर कार्य करना है। उन्होंने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई करोड़ की योजना तैयार की है जिसके द्वारा आर्यसमाज के गौरव के लिए संस्थान की प्रतिष्ठा की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य राजसिंह ने कहा कि गुरुकुल से सभी प्रकार की विकृतियां दूर की जाएं तभी गुरुकुल का उत्थान होगा। गुरुकुल में आर्यसमाज के विपरीत कार्य करने वाले को नियुक्ति ही न दी जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षक आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक ने कहा कि हमारे पास स्वर्ण अवसर है कि सभी आर्यजन यहाँ इकट्ठे हैं, सबको मिलकर गुरुकुल और आर्यसमाज की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए। आचार्य विजयपाल ने गुरुकुल की उन्नति के लिए सभी प्रकार से सहायता करने का आश्वासन दिया।

आर्य विद्यासभा के प्रधान महाशय धर्मपाल ने कहा कि स्वार्थ और अहंकार को छोड़कर कार्य करने से उन्नति प्राप्त होती है।

कार्यक्रम को आचार्य यशपाल, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, दिल्ली के मंत्री प्रकाश आर्य, उत्तमायति आदि ने भी संबोधित किया। कुलसचिव प्रो. ए.के. चोपड़ा तथा सहायक मुख्यधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में उत्तराखण्ड, झारखण्ड, उड़ीसा, हरियाणा, दिल्ली आदि से आये आर्य नेताओं का सम्मान किया गया। डॉ० विनय आर्य, मंत्री दिल्ली सभा के आह्वान पर गुरुकुल के पुनरुद्धार के लिए तत्काल विभिन्न लोगों ने 25 लाख की धनराशि दान की।

कार्यक्रम का संचालन विनय आर्य तथा योगेश शास्त्री ने सम्मिलित रूप से किया। कार्यक्रम में विभिन्न आर्यनेता, शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी तथा छात्र उपस्थित थे। **—सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।